नक्सली राजा का बाजा

उन्होंने पहली बार भोजू का यह रौद्र एवं बग़ावती रूप देखा था। वह इस वक़्त ग़ुस्से से ज़्यादा भयभीत थे। तभी उनकी पत्नी बग़ल वाले कमरे से अंदर आईं। उन्हें पसीने-पसीने देखकर पूछा-

"क्या हुआ? यह भोजू आज इतनी बदतमीज़ी क्यों कर रहा था। आदमियों को बुलवाकर उसके हाथ पैर यहीं का यहीं क्यों नहीं तुड़वा दिया। सब के सब तो बाहर बैठे हमारे ही पैसों का खा-पी रहे हैं।"

नेताजी को तेज़ आवाज़ में बोल रही पत्नी पर भी ग़ुस्सा आ गया। वह उसकी मूर्खता पर क्रोधित हो उठे कि मूर्ख औरत ऐसे फ़ुल वॉल्यूम में चिल्ला रही है। साले बाहर बैठे सुन रहे होंगे। वह तिलमिला कर बोले-

"चुप रहो, जहाँ नहीं बोलना होता वहाँ भी बछेड़ी जैसी कूद-फाँद करने लगती हो।"

उन्होंने लगे हाथ कई अन्य सख़्त बातें कहकर पत्नी को अंदर भेज दिया। पत्नी भी कमज़ोर नहीं पड़ी। उसने

संक्षिप्त सा ही सही तीखा उत्तर दिया और पैर पटकती हुई चली गई उसी दरवाज़े से दूसरे कमरे में, जिधर से आई थी। नेताजी ने उसे जाते हुए नहीं देखा। दूसरी ओर मुँह किए मन ही मन में बस गरियाए जा रहे थे कि "साले बाहर बैठे खा तो मेरे ही पैसों का रहे हैं, लेकिन हैं तो उसी साले भोजुवा के आदमी, यह सब क्यों उस पर हाथ उठाएँगे।" वह मन में ही भोजू पर हमला किए जा रहे थे।

एमी

मैंने कुछ देर और बातें करने के बाद पूछा। मॉम मैं नहीं समझ पा रही हूँ कि मुझे पूछना चाहिए कि नहीं, लेकिन पूछ रही हूँ कि आप आख़िर फ़ादर से ऐसा क्या चाहती थीं जो वह आपको नहीं दे पाते थे, और वह सब आपको उस आदमी से मिलता है नहीं, बल्कि इतना और ऐसा मिलता है कि आप इस कंडीशन में भी उसे छोड़ने को छोड़िए, छोड़ने के बारे में सोच भी नहीं पा रही हैं। बल्कि उसे हस्बैंड से भी ऊपर रखा

हुआ है। मॉम चुप रहीं। कई बार पूछने पर कहा, "मैं बहुत क्लीयर कुछ नहीं कह सकती, लेकिन पता नहीं क्यों मुझे ऐसा लगता है कि मैं जिस पीस, सैटिस्फ़ैक्शन को चाहती हूँ, वह उसके पास पहुँचते ही मुझे मिल जाते हैं। तुम्हारे फ़ादर को या तो मैं नहीं समझ पायी कि वो मुझसे क्या चाहते हैं, या फिर शायद वह मुझे समझ नहीं पाए, मुझे नहीं समझा सके कि उन्हें मुझसे क्या कुछ चाहिए, कितना चाहिए। शायद दोनों ही एक दूसरे को नहीं समझा सके, ना समझ सके।"

पॉलीटेक्निक वाले फ़ुटओवर ब्रिज पर

श्वेतांश ने उन्हें देखकर कहा, "बहुत दिनों बाद इतने बड़े-बड़े ओले देख रहा हूँ।"

"बड़े हों या छोटे लेकिन आज के बाद मैं इस ब्रिज पर नहीं आऊँगी।" रुहाना ने यह बात धीमी आवाज़ में कही क्योंकि पानी से बचने के लिए बहुत से लोग ऊपर आ गए थे। पूरा ब्रिज क़रीब-क़रीब भर गया था। उस के स्वर में ग़ुस्से को

भाँपकर श्वेतांश ने कहा, "बारिश कोई अपने हाथ में नहीं है, अपने मौसम पर ही वह बरसेगी। तुम ब्रिज पर ग़ुस्सा क्यों निकाल रही हो। देर से मैं आया, इसमें ब्रिज का क्या लेना-देना।"

"है ना लेना-देना। बारिश पता नहीं कब बंद होगी। लोग बढ़ते ही जा रहे हैं। अब यहाँ खड़ी-खड़ी धक्के खाती रहूँ। समझ में नहीं आता तुम्हें इसके अलावा कोई और जगह क्यों नहीं मिलती। ऐसा क्या है यहाँ जो तुम्हें यह अच्छा लगता है।"

"तुम नहीं समझोगी यह ब्रिज मेरे लिए क्या है?"

समायरा की स्टूडेंट

"उसके जाने के बाद प्रिंसिपल ने मुझे और उस लड़की को रोक लिया। बाक़ी टीचरों को अपनी क्लास में जाने के लिए कहा। फिर उस स्टूडेंट सतविंदर से सारी डीटेल्स पूछने लगा। वह इतनी घाघ कि कुछ भी पूछने पर एक बार में बोल ही नहीं रही थी।

“खीझ कर प्रिंसिपल ने कहा ’देखो तुम्हारे चलते स्कूल की बदनामी होगी। अगर तुम सच बता दोगी तो तुम्हें माफ़ कर देंगे। तुम्हारे फ़ादर को भी फोन कर देंगे कि घर पहुँचने पर तुम्हें कुछ ना कहें। अब आगे तुम ऐसी ग़लती नहीं करोगी। और अगर सच नहीं बताओगी तो अभी तुम्हारा नाम स्कूल से काटकर, तुम्हारे फ़ादर को बुलाकर तुम्हें उनके हवाले कर दूँगा।’ प्रिंसिपल की धमकी काम कर गई। उसका फ़ादर घर पहुँचने पर सख़्ती से पेश होने की धमकी दे ही गया था। इससे वह डर गई। उसने सारी बातें बता दीं। सतविंदर ने जो बताया उसे सुनकर ख़ुद मैं और प्रिंसिपल दोनों ही हैरत में पड़ गए। कुछ देर तक हम दोनों उसे आवाक् देखते ही रह गए।"